मन को बुद्धि के स्तर पर ले जाएं

और

जीवन में सभी स्थितियों को स्वीकार करें

स्वामी भूमानन्द तीर्थ

प्रभात रश्मिः

28 अप्रील 2011

हरिः ओम् तत् सत् ,जय गुरु !

मैं समझता हूं कि हम लोग एक अच्छे आध्यात्मिक साधक के लिए पूर्वापेक्षित गुणों की चर्चा कर रहे हैं। इसकी शुरुआत होती है इस विवेक-बुद्धि से कि क्या शाश्वत और नश्वर है और क्या सदा परिवर्तनशील है? इस विवेक-बुद्धि के साथ होने के कारण ही आप पूरी दुनिया और अपने शरीर, मन, बुद्धि और अहंकार का मूल्यांकन करते हैं। इनकी सहायता से ही आप दुनिया से संपर्क करते हैं और पाते हैं कि यहां सभी कुछ क्षणभंगुर है। अगर ऐसा है तो हमारी विवेक-बुद्धि को हमे इस बात के लिए उकसाना चाहिए कि इसके पार कैसे हों? और खोजें कि क्या है जो ऐसा नहीं है? तब आप पाते हैं कि यह आत्मा है जिसे ब्रह्मण और भगवान भी कहा जाता है। भगवान और ब्रह्मण दोनों ही आत्मा का पर्याय है। अनुभव के रूप में, ज्ञान के रूप में और निष्कर्ष के रूप में आत्मा पहला और अंतिम है ।

फिर हमारे पास कई गुण हैं - शमः, दमः, इत्यादि, कुल छः। फिर हमारे पास मुक्ति की तीव्र इच्छा भी है - मुमुक्षुत्व। मुक्ति की तीव्र इच्छा का क्या अर्थ है? इसे अनावश्यक आध्यात्मिक-दार्शनिक परिभाषा न दें।

© नारायणाश्रम तपोवनम, 2012

यह एक योग्यता है, एक कुशलता है कि इस दुनिया में बिना बंधे कैसे रहें। मैं हमेशा कहता हूं, एक वाक्य मैंने बनाया है, "इस दुनिया में जीने का एक तरीका है, बिना इससे बंधे कैसे रहें।" जीने का अर्थ है व्यवहार करना; जीने का अर्थ है काम करना; जीने का अर्थ है कुछ पाना। जो भी आवश्यक हो उसे करना बिना उससे बंधे। सब कुछ प्रकृति के द्वारा नियंत्रित है, प्रकृति के द्वारा प्रदत्त है, प्रकृति के द्वारा प्रेरित है और प्रकृति के उद्देश्य के लिए ही है। हम जन्म क्यों लेते हैं और मरते क्यों हैं? मैं नहीं समझता कि यह हमारी कृति है। इस तरह से सोचिए और आपका अहंकार क्षीण हो जाएगा और आप मुक्त हो जाएंगे। आपसे दिव्यता प्रसारित होने लगेगी। सब कुछ ईश्वरीय हो जाएगा और आप भी ईश्वरमय हो जाएंगे। आप जो भी करेंगे , सोचेंगे और बोलेंगे सबकुछ दिव्य होगा।

कल मेरे पास जमशेद्पुर से एक टेलिफोन आया था। यह एक लड़की के मां का था। उसने कहना शुरु किया - "मेरी बेटी के दूसरे अण्डाशय में भी तकलीफ़ हो गया है। पहला अण्डाशय निकालना पड़ा था। वह अभी सिर्फ़ उन्नीस साल की है। दूसरे अण्डाशय में भी ज्यादा कुछ नहीं किया जा सकता है - डाक्टर का कहना है। जो भी दवा दिया जा सकता है दिया जा चुका है।" और मां रोने लगी। मैंने कहा, "तुम एक भक्त हो, मेरी शिष्या हो। हमलोग रोग नहीं चाहते हैं। लेकिन जब वे आ जाते हैं तो हम क्या कर सकते हैं? हमें स्वीकार करना पड़ता है। तुम्हारी समस्या क्या है? दूसरे अण्डाशय को भी निकालना पड़ सकता है। तो क्या वह मां नहीं बन सकेगी? बहुत अच्छा! ग़लत क्या है? हमने तो तकलीफ़ को बुलाया नहीं। लेकिन तकलीफ़ हमारे पास आ गया है। अब क्या बाकी है? एक बार जो स्थिति घट गई है, आ गई है तो एक ही रास्ता है इसके साथ सामंजस्य कर लेना। रोने से क्या तुम सोचती हो कि कोई बदलाव होगा? यदि भगवान को आशिर्वाद की वर्षा करनी है तो आवश्यक नहीं कि वह दुःखी हृदय में ही करेगा। बल्कि उस हृदय में, जो खुशी खुशी सब को स्वीकार कर ले, जो भगवान की मर्जी है। इसलिए तुम्हे क्या सिर्फ़ इतना ही सोचना चाहिए ?", "स्वामीजी , इस छोटी बच्ची को कितनी बार आपरेशन से गुजरना होगा।" "यह सही है।

लेकिन इसका विकल्प क्या है? क्या हम आपरेशन या उपचार से बच सकते हैं?" इसलिए जो भी सबसे अच्छा संभव होगा हमसे हम वही करेंगे। और देखेंगे कि क्या होता है? कितने सारे लोग हैं। क्या हम शरीर को रखना चाहते हैं या अण्डाशय को? अण्डाशय की वजह से क्या तुम शरीर खोना चाहती हो? या तुम अण्डाशय को निकाल कर शरीर को बचा लोगी?

मैं सोचता हूं कि तुम्हे अपनी कल्पना को एक सीमा से ज़्यादा नहीं खींचना चाहिए। हम किसी बिमारी को बुलाते नहीं हैं। हम उनका स्वागत भी नहीं करते हैं। लेकिन मान लीजिए बिमारी या खराबी आ जाती है। हम क्या करेंगे? आई हुई परिस्थिति में जो भी संभव होगा हमें वही करना होगा। कितनी बार आपरेशन ? यह सही है। मैं समझता हूं मां गुरुप्रिया जी के पूर्वाश्रम पिता का भी कई आपरेशन हुआ। अगर मुझे सही सही याद है तो उनका गुर्दा अपनी जगह से हटा हुआ था। डाक्टर पता लगाना चाहते थे कि तकलीफ़ क्या है। जानने के लिए ही उन्होंने आपरेशन किया और पाया कि कुछ गड़बड़ है। एक 'आर' हैं जो निधिग्यानकुडा से आते हैं। पिछले दिनों ही मैं उनसे पूछ रहा था, "'आर' तुम्हारा आपरेशन कितनी बार हुआ है?" "दस आपरेशन। " और 'आर' के चेहरे पर कितना तेज है। वह अपने उम्र की बिलकुल नहीं लगती है। वह हमेशा श्रीमद् भागवतम के साथ रही है। लोगों से बात करते हुए, लोगों को पढ़ कर सुनाते हुए। वह बहुत ही सामाजिक भी है। क्या तुम सोच सकती हो, एक शरीर पर दस आपरेशन ! और वह अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा स्वस्थ है, मानसिक और शारीरिक रूप से।

मैं समझता हूं बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि हम जीवन की घटनाओं को स्वीकार करने के लिए कितना तैयार हैं। मेरे प्रिय साधकों, विद्यार्थियों , मुझे बस एक ही बात कहनी है - जीवन एक धारा है, नदी की बहाव की तरह। यह क्या दिशा लेगी, यह कितनी तेज बहेगी, यह किस तरह की भूमी से गुजरेगी - इसमे कोई निश्चितता नहीं है। यह पर्वत की चोटि से निकलती है। कहां से निकलेगी यह इस पर निर्भर है

कि भूमीतल कैसा है और रुकावटें कैसी है? एक बात है कि मैं इसकी दिशा को बदल सकता हूं यदि मैं इसके उद्गम में ही रुकावट डाल दूं। तो, नदी जो किसी एक दिशा में बह रही थी वह दूसरी दिशा में बहने लगेगी। लेकिन यह बहेगी। इसी तरह हमारा जीवन अनिश्चित है, निस्संदेह, लेकिन यह बहती जाएगी। इसकी धारा कहां से शुरु हुई है? नदी पर्वत की चोटि से निकलती दिखती है। अगर आप पर्वत शिखर पर जाएं और पता करें, "क्या पानी उड़ सकता है?" नहीं! "क्या यह ऊपर जाएगा? " नहीं! पानी नीचे अपना तल ढूंढ लेता है। फिर ऐसा कैसे हुआ कि पानी पर्वत शिखर पर पहूंचा? सूर्य की किरणों के कारण, पहले वाष्प बना और वाष्प बना पानी वातावरण में ऊपर उड़ता गया, फिर घनीभूत हुआ, ठंडा हुआ, इत्यादि। अधिक ऊंचाई से यह बर्फ़ के रूप में वापस आया। नीचे के तल पर यह वर्षा के रूप में आयेगा। और यह वर्षा जब पर्वत शिखर पर पड़ेगी तो यह क्या करेगी? यह नीचे बहेगी और अपना तल ढूंढ लेगी। यह तल क्या है? समुद्र ही इसका अन्तिम तल है। फिर नदी क्या है? यह समुद्र से ही उत्पन्न हुआ और समुद्र की ओर ही बहती है।

मेरे प्यारे बच्चों, हम सभी ऐसी ही नदियां हैं। हमारा उद्गम अद्भूत भगवान हैं। इसे भगवान कहें या ब्रह्मण कहें या आत्मा कहें। या फिर इसे सर्वोच्च सत्य कहें। स्रोत तो एक ही है। आपको इसे जानने की भी आवश्यकता नहीं है कि स्रोत क्या है। स्रोत से हम भाप की तरह निकले हैं आगे चल कर हम द्रवीभूत होंगे और हवा में धकेले जाएंगे। अंत में हम वापस आएंगे। हम एक व्यक्ति के रूप में वापस आये हैं। और एक व्यक्ति के रूप में हम जी रहे हैं नदी की तरह बहते हुए। हम चलते जाएंगे। जब हम समुद्र तक पहूंच जाएंगे तो हमारी धारा रुक जायेगी। केवल शांत रहिये। अगर आप को दैवीय मदद मिलनी ही होगी तो इस दैवीय मदद का मतलब बहुत कुछ होगा। मैं नहीं समझता कि एक चिंतित मन को इतनी धन्यता मिल सकती है जितना कि एक चिंता रहित मन को।

"मेरे प्यारे भगवान ! तुम सब कुछ के पीछे हो। शरीर के पीछे थे और हो। बिमारी के पीछे भी तुम थे , तुम हो।" बिमारी की वजह से हम कुछ चिज़ों से वंचित हो सकते हैं। बहुत अच्छा! "मेरा गर्भाशय नहीं है, मेरा अण्डाशय नहीं है। इसलिए मैं एक सामान्य वैवाहिक जीवन नहीं जी सकती हूं या एक औरत का जीवन।" लेकिन क्या तुम कहना चाहती हो कि बाहरी वस्तुएं ही जीवन में सब कुछ है। क्या हमारा मन बच्चे से, पति से, धन-संपत्ति से खुश और संतुष्ट होने जा रहा है? यह मन बहुत चिज़ों के रहते दुःखी हो सकता है। लेकिन यह कुछ नहीं होने से भी सुखी हो सकता है। कुछ नही ! श्रीकृष्ण उद्धव को कहते हैं :

द्वावेव चिन्तया मुक्तौ परमानन्द आप्लुतौ।

यो विमुग्धो जड़ो बालो यो गुणेभ्यः परम् गतः॥

(श्रीमद् भागवतम 11.9.4)

इस दुनिया में दो ही लोग हैं जो चिंता से मुक्त हैं और जो परमानन्द में डूबे रहते हैं। *चिन्तया मुक्तौ परमानन्द आप्लुतौ* । वे कौन हैं?

यो विमुग्धो जड़ो बालो - पहला है अत्यंत निर्दोष , निष्कपट बालक और दूसरा है वह वयस्क जो तीन गुणों के प्रभाव से पार चला गया है। *गुणेभ्यः परम् गतः।* मैं समझता हूं मानव शरीर में यह क्षमता है कि वह इस सुन्दर अतिक्रमण की स्थिति तक जा सकता है। और आप इसे कैसे प्राप्त करेंगे? न पर्वत की चोटि पर तपस्या कर के, न ही गर्म रेत या ठंडे बर्फ़ पर लेट कर। आप इसे पाते हैं, जो भी आस पास है या जो भी आपके जीवन में घट रहा है, उसके साथ स्वीकार भाव और सामंजस्य बना कर। आप सिर्फ़ इस एक

सामंजस्य के भाव को बना कर रखें। आप जानते हैं मैं दुनिया को क्या कहता हूं, "मेरी प्रिय दुनिया, मैं तुम्हारी एक उत्पत्ति हूं, तुम मेरी मां हो, पिता हो , सब कुछ हो, मेरा स्रोत हो। तुम मुझे चाहे जहां डाल दो या कुछ भी मेरे अन्दर डाल दो मैं उसका स्वागत करता हूं। मैं तुमको कहता नहीं कि तुम मेरे ऊपर कुछ फेको। तुम मुझे जहां ले जाते हो या जो भी मेरे पास लाते हो मैं स्वीकार करता हूं। एक चक्रवात मेरे शरीर को उड़ा सकता है, मैं जानता हूं। लेकिन ऐसा कोई नहीं है जो मेरे मन को उड़ा सके। मेरा मन आकाशऔर अन्तरीक्ष से ज़्यादा विशाल है। तुम मुझे जो भी दोगे , अपनापन के भाव से, प्रेम के भाव से, तारतम्यता और एकीकरण के भाव से, मैं उनको आत्म-सात् करूंगा। दुनिया से जो भी आयेगा उससे मैं और भी संपन्न महसूस करूंगा। मैं किसी तरह का विरोधाभास या असंगति नहीं बनाने जा रहा हूं।" देखो यहां कितनी तरह की बिमारियां हैं?

मां कल रो रही थी। बेटी भी रो रही थी। और मैंने कहा क्या तुम मुस्कुराने जा रही हो?

"हां, मैं मुस्कुराऊंगी, स्वामीजी"

"क्या? अरे तुम क्या कह रही हो, दूसरा अण्डाशय पहले से ही खतरे में है! अब तुम क्या करने जा रही हो? यह ऐसा क्यों हो गया? यह ऐसा क्यों हो गया ? मैं क्या करूंगी?" क्या तुम इस तरह बोलने जा रही हो या ऐसा तो हो गया है अब जो भी आवश्यक है हमे करना चाहिए? अन्ततः तुम क्या करने जा रही हो? क्या तुम इस स्थिति को हंसते हुए स्वीकार करोगी ?"

उसने हां कहा और वह मुस्कुराने लगी।

मैं जरा जोर देकर बोल रहा था। आप जानते हैं यह कितना निराशाजनक समाचार है? और एक बार जब यह आ गया है तो हम क्या करेंगे? यही मैं कहता हूं, यहां तक कि जब सबसे प्रिय व्यक्ति की जीवन शक्ति यदि चली गई है और शरीर मृत पड़ा है, आप क्या करने जा रहे हैं? रोने और विलाप करने या जो भी मृत शरीर के लिए उचित है? आखिरकार यह एक प्रिय व्यक्ति का शरीर है। प्रियता कहती है कि मृत शरीर को भी सही सम्मान मिलना चाहिए। तो, आप मृत शरीर के साथ क्या व्यवहार करना है इसके बारे में सोचेंगे ? या , "तुम चले गये! तुम चले गये !" और स्वयं भी रोयेंगे।

मैं समझता हूं मन को बुद्धि के स्तर तक उठाना है जैसा कि कृष्ण ने अर्जुन के साथ किया। अर्जुन का रोना, चिल्लाना और सुबुकना अचानक ही रुक गया जब कृष्ण ने उन्हें दुःख की ही आत्म-निरीक्षण की प्रक्रिया में डाल दिया। आत्म-निरीक्षण असंबंधित नहीं था। यह उस परिस्थिति से ही निकटता से जुड़ा था जब उसने कहा था *अशोच्यानन्वशोचः।* तुम उनके लिए शोक कर रहे हो जिनके लिए शोक करना ही नहीं चाहिए। यह अर्जुन के लिए एक झटका लगाने वाला, स्तब्ध करने वाला और प्रकट करने वाला वक्तव्य था। मैं समझता हूं इसे करने का एक तरीका है। मैं चाहूंगा कि तुम इसके बारे में जानो।

हरिः ओम् तत् सत्, जय गुरु!

Narayanashrama Tapovanam
Venginissery, P.O. Ammadam, Trichur, Kerala – 680563, India
Email: ashram1@gmail.com; Website: http://www.swamibhoomanandatirtha.org

© नारायणाश्रम तपोवनम, 2012